श्रीप्रसाद

आ री कोयल

आ री कोयल, गा री कोयल
मीठे गाने गा
मेरी इस नन्ही बगिया में
शाम-सुबह तू आ

पक्षी आते, शोर मचाते
बगिया भर जाती
सूरज मुसकाता पेड़ों पर
किरण-किरण आती

फूलों वाली, बड़ी निराली
बगिया है सुंदर
दिनभर हवा चला करती है
गम-गम, मधुर-मधुर

तू आएगी, तू गाएगी
सुन करके गाना
खिल-खिल-खिल हँस देगी बगिया
कोयल, तू आना।

सौ बच्चों ने

अक्कड़ बक्कड़ बंबे भो
अस्सी नब्बे पूरे सौ
सौ बच्चों ने गाना गाया
बड़ी जोर का शोर हुआ
जैसे अनगिन चिड़ियाँ चहकीं
सूरज आया, भोर हुआ

रंग बिरंगी पोशाकें हैं
मानो सुंदर फूल खिले
एक राग है, एक तान है
गाते हैं सब हिलेमिले

हँसी सभी के चेहरे पर है
बड़ी अजब हैं आँखें भी
सुंदर पोशाकें लगती हैं
बच्चों की हैं पाँखें भी

गाकर गीत सभी ये बच्चे
करते हें गुलजार गगन
एक साथ इतनी आवाजें
सुनकर खुश होता है मन
अक्कड़ बक्कड़ बंबे भो
अस्सी नब्बे पूरे सौ।

 ISSN:2583-8849